अशोक के उत्तराधिकारी

Ashish kumar Thakur
B.A.-1 (History-paper-1)
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur-
L.N.M.U. Darbhanga-

कुणाल [232-224 ई०पूर्व] :—

अशोक की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्रों तिवारा, महेन्द्र, कुणाल तथा जालोक) में से कुणाल गद्दी पर बैठा। पुराण, जैन तथा बौद्ध ग्रंथ इसकी पुष्टि करते है।

कुणाल 'धर्मविवर्धन (दिव्यवादन) तथा सुयशाय (विष्णु एवं भागवत पुराण) के नाम से विख्यात था।

कुणाल के संबंध में एक कहानी प्रचलित है जिसकी सौतेली तिष्यरक्षिता ने धोखे से कुणाल को अंधा करवा दिया था। अतः कुणाल स्वंय राजकाज चलाने में असमर्थ था। वास्तविक प्रशासन कुणाल का पुत्र सम्प्रति ही संभालता था। इसलिए बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में सम्प्रति को ही अशोक का उत्तराधिकारी माना है।

अशोक के पुत्र जालोक ने काश्मीर में स्वंय को स्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित कर लिया। राजतरंगिनी से विदित होता है कि अशोक के शासन के अंतिम दिनो में साम्राज्य के पश्चिमोत्तर भाग पर यवनों के आक्रमण आरम्भ हुए। जालोक को यवनों का मुकाबला करने को भेजा। उसने विजय प्राप्त की, परन्तु वह काश्मीर को साम्राज्य से अलग कर स्वंय वहाँ का स्वतंत्र शासक बन बैठा। कुणाल 8 वर्षों तक ही राज्य कर सका। 224 ई०पूर्व में कुणाल की मृत्यु हो गई।

दशरथ [224-216 ई० पूर्व] :—

वायुपुराण के अनुसार कुणाल के बाद उसका पुत्र बंधुपालित राजा बना लेकिन मत्स्यपुराण के अनुसार दशरथ राजा बना। सम्भवतः ये सभी कुणाल के पुत्र थे।

दशरथ का अभिलेख नागार्जुनी पहाड़ी (बराबर की पहाड़ी, गया, बिहार) से प्राप्त हुआ है। इसने भी अशोक की तरह देवनांप्रिय की उपाधि ली एवं आजीविकों के लिए गुफाएं दान की। सम्भवतः साम्राज्य का विभाजन दो भागों में हो गया - पूर्वी भाग की राजधानी पाटलीपुत्र दशरथ के पास, पश्चिमी भाग राजधानी - उज्जैन - सम्प्रति के हाथ में था। दशरथ ने भी 8 वर्षों तक (216 ई० पूर्व) शासन किया।

सम्प्रति [216-207 ई० पूर्व]

अशोक के उत्तराधिकारीयों में सम्प्रति ही सबसे योग्य शासक था 216 ई०पूर्व में दशरथ के बाद वह राजा बना, परन्तु इसके पूर्व भी वह अशोक, कुणाल और दशरथ के शासनकाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके थे। सम्प्रति जैन धर्म के अनुयायी थे, उन्होंने अनेक जैनमंदिरों एवं विहारों को उसने निर्माण करवाया।

सम्प्रति किसी प्रकार साम्राज्य को विघटन को रोक रखने में सफल हुआ।

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त की ही तरह भीषण दुर्भिक्ष से दुखी होकर उसने भी राज्य का त्याग किया और दक्षिण भारत (श्रवणबेलगोला, मंदिर) आकर जैन मुनियों की तरह समाधिकरण के साथ सल्लेखना विधि द्वारा जीवन त्याग किया।

शालिशूक [207- 206 ई० पूर्व] :- सम्प्रति के बाद 207 ई० पूर्व में शालिशुक राजा बना। इसे बृहस्पति भी कहा जाता है। इसने धर्म के नाम पर जनता को काफी सताया। गार्गी संहिता मे इसे दुष्टात्मा कहा गया। फलस्वरूप, इस अवस्था का लाभ उठाकर राजकुमार वृषसेन (सम्प्रति के पुत्र) ने साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम भाग मे स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर लिया।

काश्मीर के शासक जालौक ने भी मगध पर आक्रमण किया। इसी समय उत्तर-पश्चिम सीमा पर यवनो ने एन्टियोकस के नेतृत्व में हमला कर दिया।

गार्गी संहिता के अनुसार यवनों ने मथुरा, पंचाल व साकेत पर अधिकार कर लिया तथा पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यवन शासक एण्टियोकस गंधार के शासक सुभागसेन से संधि कर वापस लौट गया।

इस समूचे साम्राज्य मे अव्यवस्था और अशांति व्याप्त हो गई। इसी वातावरण में शालिशुक की हत्या कर दी गई।

देववर्मा, शतधनवान [206- 191 ई० पूर्व]

शालिशुक के पश्चात देववर्मा, राजा बना, इसने 206 से 199 ई० पूर्व तक शासन किया।

इसी के समय में बैक्ट्रिया के यवन शासक डिमेट्रियस ने 200 ई० पूर्व मे भारत पर आक्रमण कर उत्तरापथ के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

बृहद्रथ [191 - 187 ई० पूर्व] :- यह एक योग्य शासक था। उसने राजकाज एवं सैनिक मामले मे कोई दिलचस्पी नही लिया, वरन् अपना सारा समय भोग विलास मे व्यतीत करता था। इसका लाभ उठाकर बृहद्रथ का सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने राजा की हत्या कर सत्ता प्राप्त कर ली और मौर्य वंश का अंत कर दिया। अब मौर्यों के स्थान पर शुंगों का शासन आरम्भ हुआ।

Ashish